



कैसे एक जर्मन महिला की आध्यात्मिक खोज उसे भारत ले आई...

“सारनाथ प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म के चार पवित्र स्थलों में से एक है। यहीं पर शाक्यमुनि ने सर्वप्रथम अपने धर्म का प्रसार किया था। यहां, क्रिस एक घरेलू होटल चलाती हैं। उनका छोटा ईंट का घर एक बड़े स्तूप के ठीक पीछे, हरे पेड़ों में छिपा है।

क्रिश्चियन टेइक जर्मनी से हैं और उनका परिवार उन्हें क्रिस कहता है। उन्हें बचपन से प्रकृति और यात्रा से लगाव रहा है, और दशकों से वे 55 देशों की यात्रा कर चुकी हैं। 21 साल की उम्र में, क्रिस पहली बार भारत आई। उस समय वह मूर्तिकला का अध्ययन करने वाली छात्रा थीं। हैरानी की बात है कि इस प्राचीन बौद्ध देश का उनके साथ एक अद्भुत संबंध था।



एक समाजसेवी होने के नाते, क्रिस ने इथियोपिया में महान अकाल के दौरान सात साल तक स्वयंसेवक के रूप में काम किया, स्कूलों और बच्चों के लिए घरों को स्थापित करने में मदद की; फिर स्थानीय

समुदायों की सेवा करने के लिए दक्षिण अमेरिका गईं। उन्होंने लोगों की पीड़ा और मौत को करीब से देखा। इन अनुभवों ने उनके दिल को झकझोर दिया। वह यह समझने के लिए उत्सुक थीं कि मानव अस्तित्व का सही अर्थ क्या है और दुःख का मूल कारण क्या है?

अपनी खोज में भटकते हुए, क्रिस की शंकाओं का समाधान नहीं हुआ। एक बार महिला दिवस के अवसर पर, उन्होंने एक अमेरिकी चीनी महिला को ध्यान अभ्यास में देखा। वह तुरंत उस अभ्यास की ओर आकर्षित हुईं और पता चला कि यह फालुन दाफा की प्राचीन साधना थी।

क्रिस ने आध्यात्मिक साधना के सभी प्रकार के अभ्यासों और पद्धतियों को देखा था, और इस बार उनका परिचय फालुन दाफा से हुआ, जिसे उन्होंने परखने का निर्णय लिया। खोजने और परखने की अवधि के बाद, उन्होंने फालुन दाफा का अभ्यास करने का दृढ़ संकल्प लिया। 15 वर्षों के बाद, क्रिस ने कहा : “इस तरह के अभ्यास ने मुझे पूरी तरह से बदल दिया है। पहले मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था और मुझे बहुत सी बीमारियाँ थीं। इस अभ्यास के बाद, मेरे स्वास्थ्य में बहुत सुधार हुआ है। अपने रोजमर्रा के जीवन में अब मैं किसी भी तरह की समस्या का शांति से सामना करने में सक्षम हूँ।”

फालुन दाफा के अभ्यास के बाद, क्रिस ने बेहतर स्वास्थ्य और शांत मन का अनुभव किया और इसे वे दूसरों के साथ भी साझा करना चाहती थीं। फालुन दाफा का सन्देश लोगों के बीच लाने के लिए उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण आरम्भ कर दिया। आज तक, उन्होंने लद्दाख, पूर्वोत्तर भारत, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और दक्षिण भारत की यात्रा करते हुए 60 से अधिक स्कूलों का दौरा किया है।

जब क्रिस ने स्थानीय शिक्षकों और छात्रों को इस अभ्यास का परिचय दिया, तो उन्होंने इस दुखद बात के बारे में भी बताया : “यह शांतिपूर्ण साधना अभ्यास अपने जन्मस्थान – चीन में क्रूर दमन का शिकार है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) नास्तिकता को मानती है और अध्यात्म को दबाती है। 1999 के बाद से, बहुत से निर्दोष फालुन गोंग अभ्यासियों को यातनाएं दी गईं और मार डाला गया। जब मैंने भारतीय शिक्षकों और छात्रों को फालुन दाफा के चमत्कारी प्रभावों से परिचित कराया, तो मैंने उन्हें यह भी बताया कि कैसे सीसीपी इन अच्छे लोगों को सताती है, जबकि दुनिया भर के सभी देशों ने इस आध्यात्मिक साधना पद्धति को मान्यता दी है और इसका स्वागत किया है।”

क्रिस के चेहरे पर शांति और खुशी झलकती है। उनसे बात करते हुए आप उनकी हार्दिक खुशी और दिल को छू लेने वाली सादगी को महसूस कर सकते हैं। अपने पिछले जीवन और विश्व भ्रमण को याद करते हुए क्रिस अचरज से कहती हैं: “मैंने दुनिया भर की यात्रा की है, मुझे बहुत सा स्नेह और सद्भाव मिला है – लेकिन सबसे अनमोल निधि आत्मा की शांति है... दुनिया की पीड़ा समाप्त नहीं हुई है और मैंने पाया कि सत्य, करुणा और सहनशीलता के साथ जीवन जीना सबसे बड़ी उपलब्धि है। मैं इस अनमोल अभ्यास को सभी के साथ साझा करना चाहती हूँ। यह लोगों के जीवन में आशा का संचार और बेहतर जीवन जीने की उम्मीद देता है।”